भगवान श्री निरंजन कृत
श्री भवानी शतक

श्री
भवानी शतक प्रवेश
भवानी

भव = महादेव, मन्मथ
अनी = जीवन देने वाली
देवी पुराण में व्याख्या है-
भव = रुद्र, काम, संसार सागर

देवी भवानी इसीलिए कहलाती है कि वह उपरोक्त तीनों को जीवन देती है।

अथवा

अष्टमूर्ति शिव का जल रूप भव है। उसकी स्त्री उषा है, पुत्र शुक्र है। लिङ्ग और वायु पुराण में भी ऐसे ही है। चूँकि सभी जीव उसी से उत्पन्न होते हैं, जल से ही पोषित होते हैं, सब की रक्षा करने में जल समर्थ है, इसी से वे भव हैं।

वह भवानी इसीलिए कहलाती है कि वह जल की प्राणदात्री है, भव की पोषिका है।

भवानी स्तुति ही श्री भवानी शतक रूप में है। भारत में सामान्य गृहस्थ भी अपनी कन्या का नाम भवानी बड़े उल्लास से रखते हैं। अत: भवानी एक नाम है शक्ति का। उस नाम के ओट में क्या-क्या छिपा है, वही है श्री भवानी शतक में। या यों भी कह कहते हैं कि क्या नहीं है इसमें! सरस बसन्त है। आम्र की डाली है। कोकिला मत्त हो कूक रही है। कली, फूल, फल और पत्ते-सबों में वह कूजन (=अव्यक्त नाद) व्याप्त है। परोक्ष या प्रकट रूप में अनुभूत है, क्योंकि वहां प्रकाश है। अरुणिमा फैली हुई है, मणि-माणिक्य बिखरे हैं, सूर्य भी है; चन्द्र भी और अग्नि भी। अत: प्रकाश ही प्रकाश है इस सरस बसन्त में। रंगीनियाँ भी हैं। सातों रंग निराले हैं।

अष्टमी का चन्द्र सर्वत्र शोभायमान है प्रकृति सुन्दरी के भाल पर।

केवट का कठौती, घड़ा का मुँह, नाद, नदी, सागर, बसहा का सींग-सभी व्याप्त है उस अष्टमी-चन्द्र से।

विचित्रताओं से भरी है यह वाटिका। कहीं देहभाव को भस्मकर विभूति भी लगाये हैं। कहीं चैतन्य सिन्दूर बनकर सुशोभित है।

इस मण्डल में कामदेव के देव का जैसे साम्राज्य हो। मन्त्रों ने वाणी के रूप में विश्व-वाटिका को गुंजित कर रखा है। देवताओं ने इन्द्रियों के झरोखों पर आसन जमा लिया है प्राणियों में। अठासी हजार सिद्धीश्वरों ने कामेश्वर की उस वाटिका में आचार्य का काम करना पसन्द कर लिया है। और इन सबों का तमाशा देखनेवाला ध्याता बन गया है। सभी खोये-खोये से हैं यहाँ। क्या रहस्य है इसमें? कैसा आकर्षण है यहाँ? इतने वेशों में एक नटी नाच रही है। देख भी रही है वहीं। वह क्या है? तो श्री भवानी-शतक का कहना है कि वह है भवानी। वह क्या नहीं है!

काव्य, कथा, रस, छन्द इत्यादि साहित्य के जितने अंग हैं, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति आदि जीव की जितनी अवस्थायें हैं-इन सबों का रहस्य छिपा है इसमें। कुंजी भी है इसी में खोलने की। क्योंकि वाटिका खुली है। सभी उससे व्याप्त है। सबों को आनन्द मिल रहा है। आनन्द लेने वाला कोई ओट में है। क्योंकि राज खुल जाएगा।

वाटिका के पेड़ बीज से बने हैं। बीज छोटा है पर उसमें अगणित विशाल पेड़ अन्तर्हित हैं। अभी बीज और अंकुर दोनों गुप्त हैं। फिर अंकुर भी निकला। हाँ, बीज के भीतर से निकला है, जैसे कितना सुकुमार अंग हो। इसके देखने से बीज की कठोरता भी खुल जाती है। फिर जड़ जम गई धरती में। अंकुर ऊपर की ओर चला है। विशाल वृक्ष बनेगा। युग-युगान्त तक रहेगा। वृक्ष बदलते जाएंगे, बीज स्मृति में रहती जायगी। इस तरह बीज, अंकुर, प्रस्तार इत्यादि बनकर वह नटी नाच रही है। इन तीनों को देख भी रही है वही। वह है भवानी।

ऐसी सृष्टियाँ उसी बीज से कल्पान्तर में निकलती रहती है। भवानी स्मृति बनकर अपने को रखती जा रही है। है और नहीं है, दोनों में रहकर भी दोनों से निराली है। जीव में वह परा या तुरीया कहलाती है।

वह भवानी है।

"श्री" सोमानन्द

श्री भवानी शतक पाठ

ॐ

तत्सद्ब्रह्मणे नमः

पुष्पाञ्जलि

बन्दौं श्री गुरुपादुका गणपति श्री शारदा सारदा,
बन्दौं पितृ-पदाब्ज दिव्य जननी भागीरथी-ऊर्ध्वगा ।
श्री माता जगदम्ब ब्रह्म ललिता नारायणी शाश्वती,
"धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि ।"

मनीषा मूर्च्छिता क्यों हो,
वाग्देवी जागृता सदा ।
प्रच्छन्ना-सतता-धारा,
अनिरुद्धा सरस्वती ॥ १ ॥

ग्रहे भास्कर से भर्ग,
समर्पे चन्द्र चन्द्रिका ।
दाता की देन, दाता !
ले वाङ्मयी सुमनाञ्जली ॥ २ ॥

श्रीः पातु

मङ्गलाचरण

बन्दौं देशिकनाथ, ब्रह्मनिष्ठवर-व्यासपद ।
जयति महाम्बा मात, आदिशक्ति अखिलेश्वरी ॥ १ ॥

देहभाव है दास, विमल जीव विश्वेशरज।
चिद्घन आत्मविलास, निश्चलमती-निरंजनी ॥ २ ॥

अजपा अगम अपार, हंसा अगम अपार ज्यों।
सिन्धु पारावार, बिन्दु पारावार त्यों ॥ ३ ॥

घट में रमते राम, घट-घट में ज्योती जले।
पग-पग पे रसधाम, भाग्यहीन पावे नहीं ॥ ४ ॥

तव मन्दिर ब्रह्माण्ड, विराट् वैश्वानर विभु।
काल-चक्र की पाँख, चँवर डुलावे रैन दिन ॥ ५ ॥

गाथा-छन्द-भवानि, स्तुति चारफल दायिनी।
जय जय जयति महानि, दुस्तर भवसागर तरनि ॥ ६ ॥

श्री भवानी शतक

बनी विश्व की वाटिका है विशाला
कुजे कोकिला मत्त त्रिपुराम्ब बाला ।
कली फूल फल पत्र में है समायी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १ ॥

जपा-सिन्दुरी-आरुणी रूपराशी,
महामूल्य माणिक्य मौलि प्रकाशी ।
त्रिनेत्रा नमः शांकरी भास्वरानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ २ ॥

धरी चूनरी सप्तरंगी विचित्रा,
निशानाथ तिथिअष्टमी भालचित्रा ।
प्रभा-नासिका-रत्न तारा लजानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ३ ॥

विभूति रमी भाल सिन्दूर सोहे,
मदोन्मादिनी लालिमा नेत्र मोहे ।
नमो काम-कामेश्वरी अर्द्धनारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ४ ॥

कला पंचशर की त्रिबिन्दुस्वरूपा
मनू, देव, आचार्य, ध्याता अभेदा ।
हरार्द्धा-परा-चित्कला श्री शिवानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ५ ॥

महाप्राणशक्ति ! जगादे प्रभंजन,
जहाँ शून्य में मध्य बिन्दु निरंजन।
किसी ज्ञान विज्ञान की पहुँच नाहीं,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ६ ॥

बिना तालिका ओष्ठ ताला लगा क्या?
कहो मर्म में तीक्ष्ण भाला लगा क्या ?
कहाँ ? बोल ब्रजभामिनी ! कृष्ण-काली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ७ ॥

रचे रास रासेश्वरी अष्टदल में,
पिनाकी करे ताण्डवीनृत्य पल में ।
सजे साज नटराज शम्भू कपाली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ८ ॥

मृगी भार्गवी भर्ग अम्बार फैला,
त्रिखण्डा झषा खड्गयोनि त्रिशूला ।
झुकी तत्वमुद्रा महापात्रपाणी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ९ ॥

फणि-व्याल फूत्कार वृष केसरी भी,
जटाजूट जय गर्जना सुरसरी की ।
करे लास्य अटहास्य काली कराली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १० ॥

बजे शंख डमरू तुरी और सिंगी,
जगे वीर बेताल ओ शृङ्गि भृंगी ।
शिवानाद से गूँज उठी सृष्टि सारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ११ ॥

सभी सिद्धि गण साथ गणनाथ नाचें,
कलापी चढ़े देवसेनानि नाचें ।
भरी मंत्र चैतन्य से ब्रह्मनाली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १२ ॥

छिछुम छुम छिछुम्छुम् ध्वनि नुपुरों की,
पखावाज डफ खंजरी बाँसुरी भी ।
बजे मंजिरा बीन करताल ताली;
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १३ ॥

धरा सिन्धु कैलास नगराज नाचें,
भरा व्योम तारावलीवृन्द नाचें ।
झुले मानसर बीचियों में मराली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १४ ॥

चमत्कार है बिश्व बिश्वम्भरि का,
नमस्कार शम्भू स्वयम्भू हरी का ।
करें आरती सूर्य्य द्विजराज ज्ञानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १५ ॥

सदा-सर्वदा शारदा श्री परा हो,
सदा रत्न-करवा सुधा का भरा हो ।
शुची-शाम्भवी दिव्यता की निशानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १६ ॥

किया रक्त अरिपान अलि-पान जैसे,
किया भण्डदल नाश खल-त्रास जैसे ।
दिया भक्त वरदान वर-अभय वाली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १७ ॥

जया पार्वती पद्मजा पीतवस्त्रा,
त्रपा तारिणि भैरवी छिन्नमस्ता ।
उमा राज-राजेश्वरी तू मृडानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १८ ॥

तु ही शैलजा ब्रह्मगा चन्द्रघण्टा,
तु कुष्माण्डि कात्यायनी स्कन्दमाता ।
महागौरि तू सिद्धिदा कालरात्रि,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १९ ॥

तु ही 'आइ' आशापुरी, अर्द्धचन्द्रा,
तु ही काल औ मोहरात्री महोग्रा ।
निशाघोर तू हे ! महीषासुरघ्नी !
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ २० ॥

तु ही डाकिनी राकिनी लाकिनी तू,
तु ही काकिनी साकिनी हाकिनी तू ।
तु ही याकिनी उर्द्धव-ब्रह्माण्डवासी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ २१ ॥

रवी में प्रभा चन्द्र में चन्द्रिका तू,
छवी सत्र में भक्त में भावना तू ।
महायाग-श्री सोम-पीयूषदात्री,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ २२ ॥

तु ही भ्रामरी रक्तदन्ती शताक्षी,
तु ही रेणुका नन्दजा कालहन्त्री ।
क्षुधा क्षोभिणी शोभना मन्दहासी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ २३ ॥

सती जानकी सीत साकेत-धामा,
तु ही रुक्मिणी राधिका सत्यभामा ।
पुरी द्वारिका कृष्ण की राजधानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ २४ ॥

स्वधा तृप्तिदा शान्तिदा अग्निजाया,
वषट्कार ह्रीङ्कारिणी रुद्रमाया ।
कृशा कामिनी दण्डिनी शूलपाणी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ २५ ॥

तिरस्कारिणी मोहिनी अश्वरूढ़ा,
कुमारी युवा-चंचला प्रौढ़ वृद्धा ।
चरा बहुचरा धूमिनी श्रीधराणी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ २६ ॥

सुधासार-शाकम्भरी अन्नदात्री,
निशामध्य स्वप्नावती विश्वधात्री ।
प्रभा-पुंज से मोहरात्री सिरानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ २७ ॥

अजा सात्विकी राजसी तामसी तू,
प्रजापालिनी हारिणी तापसी तू ।
निराकार साकार जानी अजानी,
परब्रह्ममरूपां भवानीं भजामि ॥ २८॥

तु ही सिन्धु सारस्वती चन्द्रभागा,
तु ही कौशिकी गोमती तुङ्ग कृष्णा ।
तु कावेरी मन्दाकिनी हस्तवारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ २९ ॥

त्रिवेणी तु ही गण्डकी शोण भीमा,
तु गोदावरी नर्मदा ब्रह्मपुत्रा ।
गया घर्घरा यामुनी गंग रावी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ३० ॥

विशालाक्षि मीनाक्षि कामाक्षि कामा,
तु ही पुष्करी पावनी है ललामा ।
महाकाल कालिंजरी गुह्यकाली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ३१ ॥

तु ही अम्बिका अर्बुदा चित्रकूटा,
हरी-सिद्धि गुह्येश्वरी गृध्रकूटा ।
महालक्ष्मि कोलापुरी-कंजवासी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ३२ ॥

तु ही मच्छ कच्छी वराही तु ही है,
महायोगनिद्रा हरी की तु ही है ।
दशों विष्णु-अवतार की रूपखानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ३३ ॥

तु ही वेदमाता चतुर्विंश-वर्णा,
तु ही जीव शिव की बनी ''द्वासुपर्णा।''
कला नाद विन्दू तु ही तार तारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ३४ ॥

तु ही ज्ञान इच्छा-क्रिया-शक्ति भासा,
अनुप्राणिनी श्वास-निःश्वास वासा ।
अमा पूर्णिमा अष्टमी पर्वपाली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ३५ ॥

रमा वैष्णवी विश्व व्यापार शीला,
तु ही चण्डिका चण्ड-संहार-लीला ।
भली-भीम मातंगिनी भद्रकाली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ३६ ॥

तरु-कल्प की मूल शाखादि तू है,
अनादि प्रथा ब्रह्म-गाथा तु ही है ।
न आदी इतिश्री नहीं मध्यशाली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ३७ ॥

तु ही वाक्यशक्ति स्तुति गान गाती,
तु ही नेत्रज्योति विराटी दिखाती !
महामूर्ख संसार माँ ! तू सयानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ३८ ॥

तु ही दृश्य-दृष्टि सलोपा अलोपा,
तु एका अनेका अनेकाहि एका ।
ध्वनी मात्र बोले ''नमश्चण्डिकाये'',
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ३९ ॥

अखंडा तु ही अच्युता अद्भुता तू,
अभिन्ना प्रभिन्ना जगद्व्यापिका तू !
त्रयीलोक में तू हरानी ! समानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ४० ॥

जले ज्योति ज्वालामुखी हिङ्गुला की,
तु ही भूचरी खेचरी विन्ध्यवासी ।
पती धूर्जटी की सती सिंहवाही,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ४१ ॥

विधी-लेखनी लेखिका लेख तू है,
स्वयं-साक्षिणी भोगिणी भोग तू है ।
विधात्री विधू-शेखरी पंचपारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ४२ ॥

प्रभू की प्रभूता अकेली तू ही हो,
विधू की कला अन्तिमा माँ ! तू ही हो।
जवानी जमाखर्च ने हार मानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ४३ ॥

सृजे तत्त्व छत्तीस सृष्टी विकासी,
सदाशिव जहाँ आदि से अन्तवासी ।
तु ही अष्टसिद्धी निधी की निदानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ४४ ॥

स्वयं आप में आप श्रद्धा तु ही है,
जपे श्वास निःश्वास विश्वास तू है ।
नहीं शोक संताप सेवे सुरानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ४५ ॥

मनो धी अहं भी चिदाकाश तू है,
ध्वनी घ्राण जिह्वा दृगाकार तू है ।
त्वगाकार तू मारुती मन्मथारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ४६ ॥

तु ही ज्ञान ज्ञाता अनावर्त-ज्ञेया,
तु ही ध्यान ध्याता परावर्त-ध्येया ।
प्रमाता प्रमेया अनन्ता-प्रमाणी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ४७ ॥

भुजा चार दश अष्ट आयूध खड्गी,
गदा शूल कोदण्ड शरपाश चक्री।
शची वज्रिणी वृत्र-विच्छेदकारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ४८ ॥

प्रतापी प्रचण्डा प्रगल्भा प्रबुद्धा,
सुवीरा सुवीर-प्रिया वीर-वन्द्या।
सुरेशी महाव्योमकेशी स्मरामि,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ४९ ॥

अधः उर्ध्व में रत्न-सिंहासनी तू,
मणि-द्वीप में पंच-प्रेतासनी तू।
रही दाहिने वाम महाराज रानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ५० ॥

कहे कौन माँ ! योग-वेदान्त जाना ?
कहाँ मंत्र माँ ! तंत्र का भी ठिकाना ?
भरी मूल से शून्य लौं श्री महानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि । ५१ ॥

तु ही वेद-वेदान्त की गङ्गधारा,
तु ही आगमी-योग शक्ति अपारा
नमस्कार पदकंज-मकरंद लाली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ५२ ॥

परा पश्यती मध्यमा बैखरी तू,
स्वरा व्यंजना ह्रस्व दीर्घाक्षरी तू।
क्षरा अक्षरा मालिनी मन्त्रत्राणी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ५३ ॥

कवी-काव्य-आलाप आमोद तेरा,
गिरा-गीत संगीत तेरा बसेरा ।
श्रुति ताल लय राग स्वर सामगानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ५४ ॥

अति क्रोधिनी क्रोधहीना कृपाली,
अहंकारशून्या अहंकारशाली।
"अयं त्वं अहं" एक लीला निराली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ५५ ॥

नव द्वार की देह प्रासाद राजे,
नवों में सदा एक तू ही बिराजे ।
दशों से परे षोडसाधार-धारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ५६ ॥

महाभूत पाँचो तुम्हारी विभूति,
महाभाव आवेश है रुद्र-दूती ।
सधर्मा अधर्मा धरे ध्यान ध्यानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ५७ ॥

गुणाढ्या गुणातीत गौरी गणाम्बा,
गुरु-शक्ति गूढ़ा गुहास्था पराम्बा ।
गुरु-बोधगम्या गुरु-तत्त्वदानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ५८ ॥

त्रिलोकी त्रिलिंगी त्रिपुरान्तकी तू,
त्रिमूर्ति त्रिधा सप्तधा व्याहृति तू ।
त्रिबिक्रम त्रिधापाद-संचारकारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ५९ ॥

महाराष्ट्र-साम्राज्य-स्वातन्त्रिका तू,
महानाट्य की भूमिका प्रेक्षिका तू ।
तू ही नाट्यशाला नटी सूत्रधारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ६० ॥

सजी वीरसेना नरों-वानरों की,
बचे लाज भी भारती संस्कृती की ।
नराकार नारायणों की भलाई,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ६१ ॥

गजग्राह का युद्ध संसार-व्यापी,
पराजय व्यथा देव को ना कदापि ।
अती मन्द ज्योती तमिस्रा प्रहारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ६२ ॥

तृषा से वृथा त्रस्त संसार सारा,
बहे कुम्भ-वक्षोज से दुग्ध-धारा ।
सुझा दे मती त्राण हो प्राण-प्राणी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ६३ ॥

कहें कोई ''हस्ती हरी की कहाँ है ?''
कहें ''जानकी-राम में जान क्या है ?''
कहें ''धर्म है धूर्त पाखण्ड भारी'',
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ६४ ॥

''कहाँ पाप औ पुण्य पूजा कहाँ की ?''
''गिरे कौन ? उत्थान लज्जा कहाँ की ?
''भरो पेट जी ! भोग की भाँग छानी'',
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ६५ ॥

वृथा कल्पना जल्पना तर्क-शास्त्री,
खिले चाँदनी ज्यों अमावास रात्री ।
सुनो सूर्य्यगाथा उलू की जवानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ६६ ॥

दुकानें खुली धर्म की राम लूटा,
सभा संसदों में जगन्नाथ झूठा ।
बेचारे हरी की हुई मानहानि,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ६७ ॥

दनादन दगे मौत बन्दूक गोली,
जरा होश भी ? ज्यों चरे गाय भोली।
दया हो तुम्हारी रहे सावधानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ६८ ॥

घने घोर घन में दमक दामिनी की,
सरी व्योम सर में जरा यामिनी-सी ।
युवा-शाश्वती-चिन्मयी चन्द्रिका-सी
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ६९ ॥

मथा वारिधी दानवों-निर्जरों ने,
हलाहल कपाली सुधा पी सुरों ने ।
अभागे दिती-पुत्र के हाथ खाली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ७० ॥

ऋषि ''धार तलवार का मार्ग'' बोले,
कलाबाज नटराज का ताज डोले ।
जहाँ ''नान्य पन्था'' वदे वेद-वाणी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ७१ ॥

हरे क्यों हरी धर्म का मर्म जाने ?
विवेकी बने कर्म का धर्म जाने ।
फँसे सेठ भी भूल करता किरानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ७२ ॥

रती भक्ति अन्धी गती हीन ज्ञानी,
बधीरी सुने शारदा को सितारी ।
बिना पैर-पर की गती व्योम-यानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ७३ ॥

जगे अंग रोमांच गरुड़ध्वजा के
अलंकार झंकार जो सिन्धुजा के ।
टुटी द्वैत-अद्वैत की "शब्दजाली",
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ७४ ॥

छिपे बीन के तार-पर्दे निराले,
स्वरों की कला मीड़ जाले निराले ।
भृगु विप्र ने विष्णु को लात मारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ७५ ॥

अयोध्यापती तारिणी की कृपा से,
बली मारुती रामजी की दया से ।
सुनी कृष्ण-कात्यायनी की कहानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ७६ ॥

गिरीकर्णिका पुष्प से अर्चना हो,
मणि-कर्णिका तीर्थ से तर्पना हो ।
प्रसन्ना न क्यों हो पुरेशी पुरानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ७७ ॥

नहीं नासिका-रंध्र का मार्ग रोके,
नहीं पाद मोड़े नहीं ताल टोके ।
स्थिरा-दृष्टि-भ्रूमध्य तारा-ध्रुवाणी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ७८ ॥

नहीं लेश सन्देह जंजाल छूटे,
जहाँ मोह शोकादि का तार टूटे ।
यदी भाव हो शाम्भवी शक्तिशाली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ७९ ॥

तु ही प्रेयसी श्रेयसी पातकारी,
तु ही सूक्ष्म से सूक्ष्म औ' स्थूलकायी ।
तु ही सिद्धविद्याधरी मुण्डमाली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ८० ॥

सुधा-धार-बौछार दुष्काल भागे,
मिटे दुःख दुर्भाग्य सौभाग्य जागे ।
ग्रहें काँच क्यों ? रत्नथाती लुटाती,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ८१ ॥

किसी एक का ज्ञान अज्ञान नाशे,
उसी ज्ञान से ईश-आभा प्रकाशे ।
उसी राह की जो मिले राहदानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ८२ ॥

कटाकट कराली बजे काल-दंष्ट्रा,
प्रसन्ना निरातङ्किनी तू न रुष्टा ।
कली-काल को दन्त-पंक्ति चबाती,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ८३ ॥

नहीं खेश राकेश की ज्योति जाती,
मनो बुद्धि की बात भी ना सुनाती ।
गये सो नहीं लौटते ब्रह्मज्ञानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ८४ ॥

परे पंच-परमेश से एक-ज्ञानी,
परे द्वन्द-धुरफन्द से एक-ध्यानी।
समाधी सधी शाश्वती हैम-वारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ८५ ॥

कुटी भव्यप्रासाद या जंगलों में,
गिरे गर्त्त में जाह्नवी के कुलों में ।
निजानन्द सर्वत्र जो शुक्ल ध्यानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ८६ ॥

हृषीकेश कौन्तेय की दिव्य गीता,
पढ़े जो सुने जन्म संग्राम जीता ।
फले भाव भक्ति टले आत्मग्लानी
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ८७ ॥

स्वयं आपका आप उद्धार कीजै,
स्वयं मित्र शत्रु नहीं दोष दीजै ।
करे प्रार्थना शुद्ध बुद्धी सुजाती,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ८८ ॥

ऋणी या धनी की नहीं खोज कीजै,
नहीं शत्रु या मित्र में ध्यान दीजै ।
रमे राम क्यों मूढ ! मेधा नसानी ?
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ८९ ॥

भरे रत्न से काँच का खण्ड पाते,
बड़ी भूल अज्ञान "साक्षी" भुलाते ।
अवस्था त्रयी में तुरीया छिपानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ९० ॥

नहीं आत्म की जात जाती शरीरी,
सुधा सिन्धु है एक बीची घनेरी ।
अनेकों बना एक संघर्ष जारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ९१ ॥

बड़े कौन संसार में कौन छोटे ?
भरे एक ही नीर से सर्व लोटे ।
''अहं पूर्ण'' के खंड खंडाभिमानी
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ९२ ॥

धरा धाम सम्पत्ति नहिं साथ देते,
रुके कंठ में प्राण नहिं प्राणि चेते ।
कृपा मात्र पद पद्म से उद्धर्वगामी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ९३ ॥

कभी भी किसी ने नहीं पार पाया,
रुधे कंठ देवर्षि ने गान गाया ।
कमाया महारत्न कल्याणकारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ९४ ॥

चली थी हवा सप्तसिन्धु कहाँ थे ?
जली ब्रह्मज्योती शिवादी जहाँ थे ।
धराधर धरा धारिणी तू हिमानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ९५ ॥

रहा दास नौ मास पाला तुम्हीं ने,
पिलाया रुलाया खिलाया तुम्हीं ने ।
हँसाया सदा गोद माया भुलानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ९६ ॥

कृपा-सागरी लोक में नाम तेरा,
कृपा-पात्र मैं भी सुनो ! पुत्र तेरा ।
क्षमा धृष्टता की करो जो हमारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ९७ ॥

गिरा राम के हाथ से एक ढेला,
डुबा नीरधी-नीर में था अकेला ।
हंसे मारुती "नाम का साथ नाहीं',
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ९८ ॥

बड़े भाग्य से मानुषी देह पाते,
बड़े भाग्य से राम का नाम पाते ।
बड़े भाग्य से पादुका भी पुजाती,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ९९ ॥

हयग्रीव वाशिष्ठ ओ जामदग्नि,
शुक व्यास क्रोधीश अत्री अगस्ती ।
गुरु, गौड़, गोविन्द शैवी प्रणाली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १०० ॥

सभी देवकुल-कमल सिरताज तू है,
सभी सिद्धजन बीच महाराज तू है ।
कहो कौन भूले महावाक्य वाणी ?
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १०१ ॥

रहे संगती सज्जनों साधुओं की,
हवा से बचे दुर्जनों की खलों की ।
बसे बास वाराणसी गंग-पानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १०२ ॥

बजे नै सुरीली जहाँ में रुहानी,
बसे दम-ब-दम में नजाकत-रुहानी ।
नजारे नजर नाज को भी सलामी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १०३ ॥

नहीं पाप संसार में क्षुद्रता-सा,
नहीं सार संसार में दिव्यता-सा ।
परे जो रहे सो बड़ा भाग्यशाली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १०४ ॥

महापातकी नारकी भी न क्यों हो,
त्रिधा ताप का भुक्तभोगी न क्यों हो ।
जपे मंगला बाल दुर्गा त्रितारी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥१०५॥

यदि विश्व में दुःख दावाग्नि व्यापे,
यदि प्राणिगण क्लेश सन्ताप तापे ।
बसो शान्ति बन हृदय घर-घर दयाली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १०६ ॥

नया है नहीं विश्व में ना पुराना,
नटी एक नारी धरे वेश नाना ।
भवानी-स्तुती भी नयी ना पुरानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १०७ ॥

बजी दुन्दुभी व्योम में दिव्यता की,
गिरी पुष्प राशि सुरों के करों की ।
खुली मंजुषा राम की रत्न खानी,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १०८ ॥

भजो राम-रामा भजो पूर्ण कामा,
भजो सर्वदा श्री घनश्याम-श्यामा ।
भजे सो बने क्षुद्र से रावणारि,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ १०९ ॥

करे भाव से पाठ शत-आठ पूरे,
फले चार फल काम हों क्यों अधूरे ।
जहाँ "श्री" निरंजन सदा है दिवाली,
परब्रह्मरूपां भवानीं भजामि ॥ ११० ॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते ॥
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

□

महातीर्थ कामरूप कामाख्या
कार्तिक अमावस्या (संवत् २०६४)